टाइम एस्टीमेट्स @

यह 1988 की कहानी है। निजी कंप्यूटर (Personal Computer) को देश में आये केवल 4-5 वर्ष ही हुए थे रणनीति प्रबंध के प्रोफेसर जम्बूनाथ सोच रहे थे कि तीन पीसीएक्सटी संकाय सदस्यों के उपयोग के लिए चालू (commission) क्यों नहीं किए जा रहे थे। वह संकाय सदस्यों के उपयोग के लिए 3 पीसीएक्सटी खरीदने के लिए बमुश्किल निर्देशक की अनुमति दिला पाए थे। उन्होंने दो साल पहले एक बैंक में पीसीएक्सटी आधारित एक कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र बनवाया था, जो देश के बैंकिंग उद्योग में पहला कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र था। यहाँ वह कम्प्यूटर पर काम नहीं कर सकते थे,क्योंकि इसका मतलब था कि उन्हें एक किलोमीटर चलकर एक किराये की इमारत में स्थित कंप्यूटर केंद्र की तीसरी मंज़िल पर चढ़ना होगा। इस प्रकार 30 मिनट के काम क़े लिए उन्हें कक्षाओं के बीच की अवधि के दौरान 2 घंटे बर्बाद करने पड़ते थे। लगभग ५० वर्ष की आयु होने से वे थक भी जल्दी जाते थे । कम्प्यूटर केंद्र के प्रमुख किसी भी अधीनस्थ कर्मचारी (टाइपिस्ट, स्केनोग्राफ़र आदि) को संकाय अनुमति/ समर्थन के बाद भी कंप्यूटर का उपयोग नहीं करने देते थे। चूंकि बहुत कम लोग प्रोफेसर जम्बूनाथ की तरह पाठ्यक्रम की सामग्री विकसित कर रहे थे, उनके सामने ऐसी कोई समस्या नहीं थी। चूँकि प्रोफेसर जम्बूनाथ पर लगभग 2 गुना औसत फैकल्टी शिक्षण भार था उन्हें कंप्यूटर केंद्र सुविधाओं का उपयोग करने के लिए बहुत कम समय मिलता था।

एक दिन उन्होंने श्री विक्रम (परियोजना प्रबंधक), के कार्यालय में प्रवेश किया, जो एमईएस के मुख्य अभियंता के पद से सेवानिवृत्ति के बाद, इस संस्थान में आये थे। वे अच्छे दोस्त थे और प्रोफेसर जम्बूनाथ के रूप में एक दूसरे की चिंताओं को साझा करते थे, जब विक्रम छुट्टी पर था तब निदेशक द्वारा आवश्यक रूप से परियोजना प्रबंधन में भी जम्बूनाथ ने मदद की थी। उनके बीच निम्नलिखित वार्तालाप हुआ।

प्रो। जे .: "सुप्रभात श्री विक्रम। 3 महीने पहले खरीदे गए पीसीएक्सटी की स्थापना और कमीशन के लिए कंप्यूटर कमरे में देरी क्या है? खरीदी गयी मशीने जुलाई के पहले सप्ताह से गलियारे में धूल खा रही है। यह 10 अक्टूबर है कमरे की पेंटिंग का काम बहुत पहले हो चुका है यहां तक कि एयर कंडीशनर लगभग एक महीने पहले लग चुका है।

श्री विक्रम: "प्रो जे, आओ आओ। अब ज्यादा समय नहीं लेगा। केवल एक छोटा काम बचा है । नवम्बर के आठवें दिन इसे सौंप दिया जाना चाहिए ।
प्रो जे .: "जो कुछ किया जाना बाकी है वह क्या है?" मैं देख रहा हूँ कि सब कुछ किया जा चुका है"।
श्री विक्रम: "हमें संरक्षण के लिए तड़ितचालक लगाना होगा होगा" ।
प्रो। जे .: " उसके लिए क्या करना होगा ?"।
श्री विक्रम: "हमें एक गड्ढा बनाना है और उसमे तड़ितचालक डालना है"।
प्रो जे .: "कितना बड़ा गड्ढा है क्या यह १ मी *१ मी है या ३ मी *३ मी आकर का है ? इसकी गहराई १ फिट है या १० फिट ?"
श्री विक्रम: " नहीं नही, यह केवल 1.5 * 1.5 * 2 फीट आकार का है"।

DO NOT COPY

प्रो। जे .: " तड़ितचालक क्या आयात करना है या स्थानीय रूप से उपलब्ध है? "
श्री विक्रम: "यह स्थानीय रूप से उपलब्ध है"
प्रो। जे .: "कितनी दूर, हवाई अड्डे के पास (20 किलोमीटर दूर) या करीब 1 किलोमीटर दूर है?"
श्री विक्रम: "नहीं। नहीं, वह दूर नहीं। यह मुख्य बाजार मेंi, 5 किलोमीटर दूर उपलब्ध है "।
प्रो जे .: "यह कितना महंगा है? यह लाखों या हजारों में है? "
श्री विक्रम: " अरे नहीं यह केवल रु. ५००/- के आस पास होगा"।
प्रो। जे .: "सर, आपको चालक के साथ एक जीप दी गयी है आपके पास रु. २०००/- इम्प्रेस्ट मनी भी रहता है-। आप ड्राइवर को पैसे दे कर उसे दोपहर तक तड़ितचालक लाने के लिए कह सकते हैं। आप केवल बीस रुपये में आधे दिन के लिए मजदूर भी किराए पर ले सकते हैं। सुबह में संस्थान के कोने पर बड़ी संख्या में श्रमिक इकट्ठे होकर ट्रैफिक जाम पैदा करते है। वह दोपहर के भोजन के समय तक काम खत्म कर सकता है दोपहर में तड़ितचालक लगाया जा सकता है और तारों को पूरा किया जा सकता है। शाम तक पूरा "छोटा काम" किया जा सकता है। कल आपूर्तिकर्ता 3PCXTs स्थापित और कमीशन कर सकते हैं, और मैं कल से पीसीएक्सटी का उपयोग कर सकता हूं "।
श्री विक्रम: " मेरी खिंचाई मत करो, कल हो जायेगा यह काम"।

घोर आश्चर्य तीसरे दिन काम हो गया था। न केवल प्रोफेसर जम्बूनाथ, बल्कि अन्य संकाय सदस्यों ने कंप्यूटर केंद्र का उपयोग शुरू किया। उदाहरण के लिए, एमआईएस के वरिष्ठ प्रोफेसर सिंह एमआईएस सम्मेलन में एक शोध पत्र के 25 की पृष्ठों की पाण्डुलिपि साथ ले कर जा रहे थे। वे सोच रहे थे की उसे कैसे टाइप कराएं। प्रोफेसर जम्बूनाथ ने सुझाव दिया कि उन्हें सॉफ्टकोपी और प्रिंट आउट लेना चाहिए। प्रोफेसर आश्वस्त नहीं थे कि क्या वह संभव था क्योंकि क्योंकि उन्हें तीसरे दिन ही जाना था। प्रो जम्बूनाथ ने सुझाव दिया कि वह एक प्रयास करें और पाण्डुलिपि एक सहायक श्री प्रवीण (जिन्हे प्रो. जम्बूनाथ ने वर्ल्ड स्टार (वर्ड स्टार) सॉफ्टवेयर की मूल बातें समझा दी थीं) को एक दिन में टाइप करने को दे देना चाहिए। प्रोफेसर सिंह को सुखद आश्चर्य हुआ जब प्रवीण ने अगले दिन 25 पेज टाइप कर प्रोफेसर सिंह को दे दिया। धीरे-धीरे अन्य स्टाफ सदस्यों ने भी कंप्यूटर पर काम करना सीख लिया जो छह महीने बाद बहुत काम आया जब संस्थान ने केवल चार माह के अल्प समय में अपने एम् बी ऐ कार्यक्रम में प्रवेश ३० से बढाकर १०० कर दिया।

बीस साल बाद डॉ जम्बूनाथ ने यह कहानी आई आई एम् परिवार के एक नए संसथान के नवनियुक्त निदेशक को सुनाई जिन्होंने देरी होने, उसके कारणों और परिणामों पर कई सवाल उठाए। डॉ जम्बूनाथ मुस्कुराये और बोले “कि क्या चीजें वास्तव में बदल गई हैं?”

DO NOT COPY